



जीवन का सार : श्री मद्भगवद्गीता

"भगवद् गीता," जिसे हम सभी 'जीवन का मार्गदर्शन' कहते हैं, केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन की हर समस्या का समाधान देने वाला अमूल्य ज्ञान है। आज के दौर में, जब इंसान अनेक समस्याओं से जूझ रहा है—जैसे तनाव, असफलता, लालच, और अनिश्चितता—भगवद् गीता के श्लोक हमारे लिए रोशनी का मार्ग बन सकते हैं।

1 कर्म का फल



(अध्याय 2, श्लोक 47):

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥

अर्थ:

कर्म करने पर ध्यान केंद्रित करें, फल की चिंता न करें। निःस्वार्थ भाव से काम करें।

2 मन का वश



(अध्याय 6, श्लोक 34):

व्यासनेनाद्यते लोको विद्वान्येनाद्यते पुनः ।
मोहाद्यते स्वभावेन तथात्मा नित्यनाद्यते ॥

अर्थ:

मन को वश में करना मुश्किल है, लेकिन अभ्यास और वैराग्य से यह संभव है।

3 आत्म-बल



(अध्याय 6, श्लोक 5):

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥

अर्थ:

अपनी उन्नति स्वयं करें, आप ही अपने मित्र और शत्रु हैं। दूसरों पर निर्भर न रहें।

4 स्थिरता



(अध्याय 2, श्लोक 56):

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थिरधीर्मुनिरुच्यते ॥

अर्थ:

दुःख में विचलित न हों और सुख में आसक्त न बनें।
खुशी और गम को समान रूप से स्वीकार करें।

5 धर्म का रक्षण



(अध्याय 4, श्लोक 7):

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

अर्थ:

जब-जब धर्म की हानि होती है, मैं अवतार लेता हूँ।
सत्य और धर्म की रक्षा करें।

6 कर्म का नियम



(अध्याय 3, श्लोक 5):

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥

अर्थ:

कोई भी व्यक्ति बिना कर्म किए एक क्षण भी नहीं रह सकता। हमेशा सकारात्मक और रचनात्मक काम में व्यस्त रहें।

7 समानता



(अध्याय 9, श्लोक 29):

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेषोऽस्ति न प्रियः ।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम् ॥

अर्थ:

मैं सभी प्राणियों के लिए समान हूँ। सभी के साथ समान व्यवहार करें।

8 संतुष्टि



(अध्याय 4, श्लोक 22):

यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वहीतो विमत्सरः ।
समः सिद्धासिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥

अर्थ:

जो जैसा है, उसी में संतुष्ट रहे। सफलता और असफलता दोनों में समान रहें।

9 ज्ञान का बल



(अध्याय 4, श्लोक 36):

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिप्यसि ॥

अर्थ:

ज्ञान से सारे पापों को पार किया जा सकता है। सही ज्ञान और शिक्षा से जीवन की चुनौतियों का समाधान करें।

10 ईश्वर-स्मरण



(अध्याय 8, श्लोक 7):

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मा मे वैष्यस्य संशयम् ॥

अर्थ:

हर समय मेरा स्मरण करते हुए अपने कर्म करो। ध्यान और ईश्वर-भक्ति के साथ जीवन की कठिनाइयों का सामना करें।

गीता का ज्ञान

भगवद् गीता जीवन के हर पहलू को स्पर्श करते हुए, कर्म, मन, आत्मा, और ईश्वर के साथ संबंधों को समझने में मदद करता है। यह श्लोक और उनके अर्थ न केवल जीवन के आम समस्याओं का समाधान सुझाते हैं बल्कि हमें अपने कार्यों, सोच और दृष्टिकोण को सुधारने के लिए प्रेरित करते हैं।

